बोधराज सीकरी : कांग्रेस को चिंतन और मंथन करना चाहिए

सेक्युलर बनाम कम्युनल की परिभाषा

बोध राज सीकरी

राहुल गांधी का यह कहना कि इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग सेक्युलर है, एक हास्यास्पद बयान है क्योंकि अगर यह संस्था सेक्युलर है तो विश्व में कोई भी संस्था कम्यूनल नहीं है। जो संस्था जिन्ना की समर्थक है, जिस संस्था के कारण धर्म के आधार पर देश का विभाजन करवाया गया, जिस बँटवारे के कारण हज़ारों बहने विधवा हुई, हज़ारों बच्चे अनाथ हुए, हज़ारों महिलाओं की इज्ज़त लूटी गई, हज़ारों हमारे बुजुर्ग मारे गए, हज़ारों लोग बेघर हुए, अगर वह संस्था सेक्युलर है तो कम्यूनल कौन सी संस्था है।

हिंदुस्तान के टुकड़े होने का और पाकिस्तान का गठन होने का यदि कोई उत्तरदायी है तो यह संस्था ही है। दो वर्ष पूर्व हमारे प्रधान मंत्री ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस आयोजन करने का फ़ैसला लिया ताकि हमारे बुजुर्गों के जख्मों पर मरहम लग सके परंतु राहुल गांधी के इस ग़ैर जिम्मेदाराना बयान ने हमारे जख्मों को फिर से हरा कर दिया है। अफ़सोस इस बात का है कि इस संस्था ने कांग्रेस के साथ सौदेबाजी कर लाखों लोगों को दर-दर की ठोकरें खाने पर मजबूर किया। यह वो पार्टी है जो तीन तलाक़ के फ़ैसले का पुरज़ोर विरोध करती है। फिर तो सिमी जैसी संस्था को भी राहुल गांधी को सेक्युलर घोषित करना चाहिए। यह लिखते हुए दर्द महसूस हो रहा है कि जिस पार्टी के जुलूस में पाकिस्तान के नारे लगाए जाते हैं, जिनके जुलूस में पाकिस्तान के झंडे को खुलेआम लहराया जाता है, ऐसी ऑर्गनाइजेशन को सेक्युलर ठहराया जा रहा है। यह अलगाववादियों का खेल नहीं तो क्या है। अचम्भा इस बात का है कि जब भी राहुल विदेश जाते है तो अचानक देश की मर्यादा को भूल जाते है। यह एक विडंबना है। सभी को मालूम ही होगा कि इस संस्था का कांग्रेस के साथ केरल में गठबंधन है जिसके कारण राहुल केरल से जीते थे और लगता है वो इस प्रकार की बयानबाजी करके अपना क़र्ज़ उतार रहे हैं। यू.पी.ए. की सरकार के दौरान एक बिल लाने का प्रयास किया गया था जिसके अनुसार अगर दंगे होंगे तो हिंदू दोषी माना जाएगा

और मुस्लिम विक्टिम माना जाएगा। अगर यह बिल लागू हो जाता तो दंगे होने के कारण हिंदू को जेल जाना पड़ता। शुक्र है कि वो बिल नहीं आया। यही कांग्रेस की असली मानसिकता है।

सर्वाधिक लोगों को मालूम है कि इस माह भारत के प्रधान मंत्री स्टेट विज़िट पर यू.एस.ए. जा रहे हैं। वहाँ की सरकार आँखे बिछा कर प्रतीक्षा कर रही है जो राहुल गांधी पचा नहीं पा रहे हैं। इस बार तो पी.एम. संयुक्त हाउस को भी सम्बोधित करेंगे। एक देश का प्रधान मंत्री मोदी जी के पाँव छूता है, दूसरे देश का प्रधान मंत्री उन्हें बॉस कहकर पुकारता है और यू.एस. प्रेसिडेंट उनका ऑटोग्राफ़ माँगता है। इन हालात में राहुल गांधी मोदी जी के पहुँचने से पहले उनकी निंदा करना, सरकारी संस्थाओं के ख़िलाफ़ बोलना, ताकि पूरे विश्व पर उसका असर पड़े परंतु दुर्भाग्य है राहुल गांधी का कि पूरा विश्व नमन करता है हमारे मोदी जी को। राहुल गांधी ने यू.एस. में प्रत्यक्ष रूप में और लंदन में परोक्ष रूप में अपना नकारात्मक एजेंडा चलाया परंतु सफल नहीं हुए ना होंगे। विडम्बना इस बात की है कि उनके अपनी विचारधारा वाले श्रीमान पित्रोदा जी कहते हैं कि देश के पी.एम. हर जगह सम्मान के हक़दार हैं। यह दो बातें एक दूसरे के विपरीत नहीं है क्या? कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ।

विडम्बना इस बात की भी है कि राहुल गांधी ने 2004 से 2023 तक 19 साल में कोई ऐसा काम नहीं किया जिसको वो अपनी उपलब्धि मानकर विदेश में प्रचार कर सके। उनके पास नकारात्मकता के सिवा कुछ नहीं है।व्यक्ति की दुकान में जो होता है वो व्यक्ति वही सामान बेचता है।

। पुलिस अधीक्षक ने साइबर अपराध पर बदलते रहे । पाठ्यक्रमों में दाखिले के इच्छुक

कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ : बोधराज सीकरी

गुड़गांव, 5 जून (ब्यूरो): कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ।

उक्त बातें भाजपा के वरिष्ठ नेता बोधराज सीकरी ने कहीं। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी का यह कहना कि इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग सेक्युलर है, एक हास्यास्पद बयान है क्योंकि अगर यह संस्था सेक्युलर है तो विश्व में कोई भी संस्था कम्यूनल नहीं है। जो संस्था जिन्ना की समर्थक है, जिस संस्था के कारण धर्म के आधार पर देश का विभाजन करवाया गया, जिस बँटवारे के कारण हज़ारों बहने विधवा हुई, हज़ारों बच्चे अनाथ हुए, हज़ारों महिलाओं की इज़्ज़त लूटी गई, हज़ारों हमारे बुज़ुर्ग मारे गए, हज़ारों लोग बेघर हुए, अगर वह संस्था सेक्युलर है तो कम्यूनल कौन सी संस्था है। हिंदुस्तान के टुकड़े होने का और पाकिस्तान का गठन होने का यदि कोई उत्तरदायी है तो यह संस्था ही है। दो वर्ष पूर्व हमारे प्रधान मंत्री ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस आयोजन करने का फ़ैसला लिया ताकि हमारे बुजुर्गों के ज़ख्मों पर मरहम लग सके परंतु राहुल गांधी के इस ग़ैर ज़िम्मेदाराना बयान ने हमारे ज़ख्मों को फिर से हरा कर दिया है। अफ़सोस इस बात का है कि इस संस्था ने कांग्रेस के साथ सौदेबाज़ी कर लाखों

बोधराज सीकरी

लोगों को दर-दर की ठोकरें खाने पर मजबूर किया। यह वो पार्टी है जो तीन तलाक़ के फ़ैसले का पुरज़ोर विरोध करती है। फिर तो सिमी जैसी संस्था को भी राहुल गांधी को सेक्युलर घोषित करना चाहिए। जिस पार्टी के जुलूस में पाकिस्तान के नारे लगाए जाते हैं, जिनके जुलूस में पाकिस्तान के झंडे को खुलेआम लहराया जाता है, ऐसी ऑर्गनाइज़ेशन को सेक्युलर ठहराया जा रहा है। यह अलगाववादियों का खेल नहीं तो क्या है। अचम्भा इस बात का है कि जब भी राहुल विदेश जाते है तो अचानक देश की मर्यादा को भूल जाते है।

राष्ट्रीय सहारा
राष्ट्रीयता ■ कर्त्तव्य ■ समर्पण

राहुल गांधी का ब्यान हास्यास्पद : सीकरी

गुरुग्राम (एसएनबी)। हरियाणा सीएसआर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष एवं पंजाबी बिरादरी महासंगठन के प्रधान बोधराज सीकरी ने राहुल गांधी के उस कथन को हास्यास्पद बताया है, जिसमें उन्होंने कहा है कि इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग सेक्युलर है।

बोधराज सीकरी ने उनके कथन की निंदा करते हुए कहा कि जो संस्था जिन्ना की समर्थक है, जिस संस्था के कारण धर्म के आधार पर देश का विभाजन करवाया गया। जिस बंटवारे के कारण हजारों बहनें विधवा हुई। बुजुर्ग मारे गए। लोग बेघर हुए। अगर वह संस्था सेक्युलर है तो कम्यूनल कौन सी संस्था है। उन्होंने कहा कि हिंदुस्तान के टुकड़े होने का और पाकिस्तान का गठन होने का यदि कोई उत्तरदायी है तो यह संस्था ही है। सीकरी ने कहा कि दो वर्ष पूर्व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस आयोजन करने का निर्णय लिया, ताकि हमारे बुजुर्गों के जख्मों पर मरहम लग सके। राहुल गांधी के इस गैर जिम्मेदाराना बयान से हमारे जख्मों को फिर से हरा कर दिया है। उन्होंने कहा कि यह वह पार्टी है जो तीन तलाक के फैसले का पुरजोर विरोध करती है। फिर तो सिमी जैसी संस्था को भी राहुल गांधी को सेक्युलर घोषित करना चाहिए। सीकरी ने कहा कि यूपीए की सरकार के दौरान एक बिल लाने का प्रयास किया गया था, जिसके अनुसार अगर दंगे होंगे तो हिंदू दोषी माना जाएगा और मुस्लिम विक्टिम माना जाएगा। अगर यह बिल लागू हो जाता तो दंगे होने के कारण हिंदू को जेल जाना पड़ता। शुक्र है कि वो बिल नही आया। कांग्रेस की असली मानसिकता है।

सेक्युलर बनाम कम्यूनल की परिभाषा : बोध राज सीकरी

ह्यूमन इंडिया/ब्यूरो

गुरुग्राम। राहुल गांधी का यह कहना कि इंडियन यूनियन मुसलिम लीग सेक्युलर है, एक हास्यास्पद बयान है क्योंकि अगर यह संस्था सेक्युलर है तो विश्व में कोई भी संस्था कम्यूनल नहीं है। जो संस्था जिन्ना की समर्थक है, जिस संस्था के कारण धर्म के आधार पर देश का विभाजन करवाया गया, जिस बँटवारे के कारण हज़ारों बहने विधवा हुई, हज़ारों बच्चे अनाथ हुए, हज़ारों महिलाओं की इज़्ज़त लूटी गई, हज़ारों हमारे बुजुर्ग मारे गए, हज़ारों लोग बेघर हुए, अगर वह संस्था सेक्युलर है तो कम्यूनल कौन सी संस्था है। हिंदुस्तान के टुकड़े होने का और पाकिस्तान का गठन होने का यदि कोई उत्तरदायी है तो यह संस्था ही है। दो वर्ष पूर्व हमारे प्रधान मंत्री ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस आयोजन करने का फ़ैसला लिया ताकि हमारे बुजुर्गों के ज़ख्मों पर मरहम लग सके परंतु राहुल गांधी के इस ग़ैर जिम्मेदाराना बयान ने हमारे ज़ख्मों को फिर से हराकर दिया है। अफ़सोस इस बात का है कि इस

● कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ : बोधराज सीकरी

संस्था ने कांग्रेस के साथ सौदेबाज़ी कर लाखों लोगों को दर-दर की ठोकरें खाने पर मजबूर किया। यह वो पार्टी है जो तीन तलाक़ के फ़ैसले का पुरज़ोर विरोध करती है। फिर तो सिमी जैसी संस्था को भी राहुल गांधी को सेक्युलर घोषित करना चाहिए। यह लिखते हुए दर्द महसूस हो रहा है कि जिस पार्टी के जुलूस में पाकिस्तान के नारे लगाए जाते हैं, जिनके जुलूस में पाकिस्तान के झंडे को खुलेआम लहराया जाता है, ऐसी ऑर्गनाइज़ेशन को सेक्युलर ठहराया जा रहा है। यह अलगाववादियों का खेल नहीं तो क्या है।

अचम्भा इस बात का है कि जब भी राहुल विदेश जाते है तो अचानक देश की मर्यादा को भूल जाते है। यह एक विडंबना है। सभी को मालूम ही

होगा कि इस संस्था का कांग्रेस के साथ केरल में गठबंधन है जिसके कारण राहुल केरल से जीते थे और लगता है वो इस प्रकार की बयानबाज़ी करके अपना क़र्ज़ा उतार रहे हैं। यू.पी.ए. की सरकार के दौरान एक बिल लाने का प्रयास किया गया था जिसके अनुसार अगर दंगे होंगे तो हिंदू दोषी माना जाएगा और मुसलिम विक्टिम माना जाएगा। अगर यह बिल लागू हो जाता तो दंगे होने के कारण हिंदू को जेल जाना पड़ता। शुक्र है कि वो बिल नहीं आया। यही कांग्रेस की असली मानसिकता है।

सर्वाधिक लोगों को मालूम है कि इस माह भारत के प्रधान मंत्री स्टेट विज़िट पर यू.एस.ए. जा रहे हैं। वहाँ की सरकार आँखे बिछा कर प्रतीक्षा कर रही है जो राहुल गांधी पचा नहीं पा रहे हैं। इस बार तो पी.एम. संयुक्त हाउस को भी सम्बोधित करेंगे। एक देश का प्रधान मंत्री मोदी जी के पाँव छूता है, दूसरे देश का प्रधान मंत्री उन्हें बॉस कहकर पुकारता है और यू.एस. प्रेसिडेंट उनका ऑटोग्राफ़ माँगता है। इन हालात में राहुल गांधी मोदी जी के पहुँचने से पहले उनकी निंदा करना, सरकारी संस्थाओं के ख़िलाफ़ बोलना, ताकि पूरे विश्व पर उसका असर पड़े परंतु दुर्भाग्य है राहुल गांधी का कि पूरा विश्व नमन करता है हमारे मोदी जी को। राहुल गांधी ने यू.एस. में प्रत्यक्ष रूप में और लंदन में परोक्ष रूप में अपना नकारात्मक एजेंडा चलाया परंतु सफल नहीं हुए ना होंगे। विडम्बना इस बात की है कि उनके अपनी विचारधारा वाले श्रीमान पित्रोदा जी कहते हैं कि देश के पी.एम. हर जगह सम्मान के हक़दार हैं। यह दो बातें एक दूसरे के विपरीत नहीं है क्या? कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ।

विडम्बना इस बात की भी है कि राहुल गांधी ने 2004 से 2023 तक 19 साल में कोई ऐसा काम नहीं किया जिसको वो अपनी उपलबधि मानकर विदेश में प्रचार कर सके। उनके पास नकारात्मकता के सिवा कुछ नहीं है।व्यक्ति की दुकान में जो होता है वो व्यक्ति वही सामान बेचता है। राहुल के पास मोदी विरोधी, भाजपा विरोधी, आर.एस.एस. विरोधी, हिंदुत्व विरोधी विचार धारा के सिवा कुछ नहीं है। इसलिय उनकी इस प्रकार की प्रवृतति बन गई है। जनता को मंथन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ।

लेखक ने यह लेख विभाजन के दर्द से प्रेरित होकर निजी कपैसिटी में लिखा है क्योंकि हमारे बुजुर्गों ने विभाजन विभीषिका को सहा है। उन बुजुर्गों की आत्मा कभी भी अलगाववादियों की शक्तियों को माफ़ नहीं करेगी क्योकि हमारे लिए राष्ट्र सर्वोपरि है।

Postal No. : P/BWN/47/2023-2025
E-mail : haryanakiaawaz@gmail.com
www.haryanakiaawaz.in

सबसे तेज... सबसे आगे

हरियाणा की आवाज

भिवानी, चंडीगढ़, हिसार से एक साथ प्रकाशित

राष्ट्रवादी हिन्दी दैनिक

वर्ष : 14 अंक : 348 | भिवानी मंगलवार 06 जून 2023 | मूल्य : 3.00 रुपये | कुल पृष्ठ : 8

7:36 AM

कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए : बोधराज सीकरी

गुरुग्राम। हरियाणा सीएसआर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष एवं पंजाबी बिरादरी महासंगठन के प्रधान बोधराज सीकरी ने राहुल गांधी के उस कथन को हास्यास्पद बताया है, जिसमें उन्होंने कहा है कि इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग सेक्युलर है। बोधराज सीकरी ने उनके कथन की निंदा करते हुए कहा कि जो संस्था जिन्ना की समर्थक है, जिस संस्था के कारण धर्म के आधार पर देश का विभाजन करवाया गया। जिस बंटवारे के कारण हजारों बहनें विधवा हुई, हजारों बच्चे अनाथ हुए, हजारों महिलाओं की इज्जत लूटी गई। बुजुर्ग मारे गए। लोग बेघर हुए। अगर वह संस्था सेक्युलर है तो कम्यूनल कौन सी संस्था है। उन्होंने कहा कि हिंदुस्तान के टुकड़े होने का और पाकिस्तान का गठन होने का यदि कोई उत्तरदायी है तो यह संस्था ही है। सीकरी ने कहा कि दो वर्ष पूर्व हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस आयोजन करने का निर्णय लिया, ताकि हमारे बुजुर्गों के जख्मों पर मरहम लग सके। राहुल गांधी के इस गैर जिम्मेदाराना बयान से हमारे जख्मों को फिर से हरा कर दिया है। असफसोस इस बात का है कि इस संस्था ने कांग्रेस के साथ सौदेबाजी कर लाखों लोगों को दर-दर की ठोकरें खाने पर मजबूर किया। यह वो पार्टी है जो तीन तलाक के फैसले का पुरजोर विरोध करती है। फिर तो सिमी जैसी संस्था को भी राहुल गांधी को सेक्युलर घोषित करना चाहिए। बोधराज सीकरी ने कहा कि यूपीए की सरकार के दौरान एक बिल लाने का प्रयास किया गया था, जिसके अनुसार अगर दंगे होंगे तो हिंदू दोषी माना जाएगा और मुस्लिम विक्टिम माना जाएगा। अगर यह बिल लागू हो जाता तो दंगे होने के कारण हिंदू को जेल जाना पड़ता। शुक्र है कि वो बिल नहीं आया। यही कांग्रेस की असली मानसिकता है।

7:36 AM

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

RNI No.DELHIN/2015/66886

ओपन सर्च

सेक्युलर बनाम कम्यूनल की परिभाषा: बोध राज सीकरी

ओपन सर्च/ विशेष संवाददाता सतवीर भारद्वाज

गुरुग्राम। राहुल गांधी का यह कहना कि इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग सेक्युलर है, एक हास्यास्पद बयान है क्योंकि अगर यह संस्था सेक्युलर है तो विश्व में कोई भी संस्था कम्यूनल नहीं है। जो संस्था जिन्ना की समर्थक है, जिस संस्था के कारण धर्म के आधार पर देश का विभाजन करवाया गया, जिस बँटवारे के कारण हजारों बहने विधवा हुई, हजारों बच्चे अनाथ हुए, हजारों महिलाओं की इज्ज़त लूटी गई, हजारों हमारे बुजुर्ग मारे गए, हजारों लोग बेघर हुए, अगर वह संस्था सेक्युलर है तो कम्यूनल कौन सी संस्था है।

हिंदुस्तान के टुकड़े होने का और पाकिस्तान का गठन होने का यदि कोई उत्तरदायी है तो यह संस्था ही है। दो वर्ष पूर्व हमारे प्रधान मंत्री ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस आयोजन करने का फ़ैसला लिया ताकि हमारे बुजुर्गों के जख्मों पर मरहम लग सके परंतु राहुल गांधी के इस ग़ैर ज़िम्मेदाराना बयान ने हमारे जख्मों को फिर से हरा कर

दिया है। अफ़सोस इस बात का है कि इस संस्था ने कांग्रेस के साथ सौदेबाज़ी कर लाखों लोगों को दर-दर की ठोकरें खाने पर मजबूर किया। यह वो पार्टी है जो तीन तलाक़ के फ़ैसले का पुरज़ोर विरोध करती है। फिर तो सिमी जैसी संस्था को भी राहुल गांधी को सेक्युलर घोषित करना चाहिए। यह लिखते हुए दर्द महसूस हो रहा है कि जिस पार्टी के जुलूस में पाकिस्तान के नारे लगाए जाते हैं, जिनके जुलूस में पाकिस्तान के झंडे को खुलेआम लहराया जाता है, ऐसी ऑर्गनाइज़ेशन को सेक्युलर ठहराया जा रहा है। यह अलगाववादियों का खेल नहीं तो क्या है। अचम्भा इस बात का है कि जब भी राहुल विदेश जाते है तो अचानक देश की मर्यादा को भूल जाते है। यह एक विडंबना है। सभी को मालूम ही होगा कि इस संस्था का कांग्रेस के साथ केरल में गठबंधन है जिसके कारण राहुल केरल से जीते थे और लगता है वो इस प्रकार की बयानबाज़ी करके अपना क़र्ज़ा उतार रहे हैं। यू.पी.ए. की सरकार के दौरान एक बिल लाने का प्रयास किया गया था जिसके अनुसार अगर दंगे होंगे तो हिंदू दोषी माना जाएगा और मुस्लिम विक्टिम माना जाएगा। अगर

> ■ कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ : बोधराज सीकरी

यह बिल लागू हो जाता तो दंगे होने के कारण हिंदू को जेल जाना पड़ता। शुक्र है कि वो बिल नहीं आया। यही कांग्रेस की असली मानसिकता है।

सर्वाधिक लोगों को मालूम है कि इस माह भारत के प्रधान मंत्री स्टेट विज़िट पर यू.एस.ए. जा रहे हैं। वहाँ की सरकार आँखे बिछा कर प्रतीक्षा कर रही है जो राहुल गांधी पचा नहीं पा रहे हैं। इस बार तो पी.एम. संयुक्त हाउस को भी सम्बोधित करेंगे। एक देश का प्रधान मंत्री मोदी जी के पाँव छूता है, दूसरे देश का प्रधान मंत्री उन्हें बॉस कहकर पुकारता है और यू.एस. प्रेसिडेंट उनका ऑटोग्राफ़ माँगता है। इन हालात में राहुल गांधी मोदी जी के पहुँचने से पहले उनकी निंदा करना, सरकारी संस्थाओं के ख़िलाफ़ बोलना, ताकि पूरे विश्व पर उसका असर पड़े परंतु दुर्भाग्य है राहुल गांधी का कि पूरा विश्व नमन करता है हमारे मोदी जी को। राहुल गांधी ने यू.एस. में प्रत्यक्ष रूप में और लंदन में परोक्ष रूप में अपना नकारात्मक एजेंडा चलाया परंतु सफल नहीं हुए ना होंगे। विडम्बना इस बात की है कि उनके अपनी विचारधारा वाले श्रीमान पित्रोदा जी कहते हैं कि देश के पी.एम. हर जगह सम्मान के हक़दार हैं। यह दो बातें एक दूसरे के विपरीत नहीं है क्या?

कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ। विडम्बना इस बात की भी है कि राहुल गांधी ने 2004 से 2023 तक 19 साल में कोई ऐसा काम नहीं किया जिसको वो अपनी उपलब्धि मानकर विदेश में प्रचार कर सके। उनके पास नकारात्मकता के सिवा कुछ नहीं है व्यक्ति की दुकान में जो होता है वो व्यक्ति वही सामान बेचता है। राहुल के पास मोदी विरोधी, भाजपा विरोधी, आर.एस.एस. विरोधी, हिंदुत्व विरोधी विचार धारा के सिवा कुछ नहीं है। इसलिये उनकी इस प्रकार की प्रवृत्ति बन गई है।

जनता को मंथन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ। लेखक ने यह लेख विभाजन के दर्द से प्रेरित होकर निजी कपैसिटी में लिखा है क्योंकि हमारे बुजुर्गों ने विभाजन विभीषिका को सहा है। उन बुजुर्गों की आत्मा कभी भी अलगाववादियों की शक्तियों को माफ़ नहीं करेगी क्योंकि हमारे लिए राष्ट्र सर्वोपरि है ।

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

ह्यूमन इंडिया

हम बनेंगे आपकी आवाज

सेक्युलर बनाम कम्यूनल की परिभाषा : बोध राज सीकरी

ह्यूमन इंडिया/ब्यूरो

गुरुग्राम। राहुल गांधी का यह कहना कि इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग सेक्युलर है, एक हास्यास्पद बयान है क्योंकि अगर यह संस्था सेक्युलर है तो विश्व में कोई भी संस्था कम्यूनल नहीं है। जो संस्था जिन्ना की समर्थक है, जिस संस्था के कारण धर्म के आधार पर देश का विभाजन करवाया गया, जिस बँटवारे के कारण हज़ारों बहने विधवा हुई, हज़ारों बच्चे अनाथ हुए, हज़ारों महिलाओं की इज़्ज़त लूटी गई, हज़ारों हमारे बुज़ुर्ग मारे गए, हज़ारों लोग बेघर हुए, अगर वह संस्था सेक्युलर है तो कम्यूनल कौन सी संस्था है। हिंदुस्तान के टुकड़े होने का और पाकिस्तान का गठन होने का यदि कोई उत्तरदायी है तो यह संस्था ही है। दो वर्ष पूर्व हमारे प्रधान मंत्री ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस आयोजन करने का फ़ैसला लिया ताकि हमारे बुज़ुर्गों के ज़ख्मों पर मरहम लग सके परंतु राहुल गांधी के इस ग़ैर ज़िम्मेदाराना बयान ने हमारे ज़ख्मों को फिर से हराकर दिया है। अफ़सोस इस बात का है कि इस

● कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ : बोधराज सीकरी

संस्था ने कांग्रेस के साथ सौदेबाज़ी कर लाखों लोगों को दर-दर की ठोकरें खाने पर मजबूर किया। यह वो पार्टी है जो तीन तलाक़ के फ़ैसले का पुरज़ोर विरोध करती है। फिर तो सिमी जैसी संस्था को भी राहुल गांधी को सेक्युलर घोषित करना चाहिए। यह लिखते हुए दर्द महसूस हो रहा है कि जिस पार्टी के जुलूस में पाकिस्तान के नारे लगाए जाते हैं, जिनके जुलूस में पाकिस्तान के झंडे को खुलेआम लहराया जाता है, ऐसी ऑर्गनाइज़ेशन को सेक्युलर ठहराया जा रहा है। यह अलगाववादियों का खेल नहीं तो क्या है।

अचम्भा इस बात का है कि जब भी राहुल विदेश जाते है तो अचानक देश की मर्यादा को भूल जाते है। यह एक विडंबना है। सभी को मालूम ही

होगा कि इस संस्था का कांग्रेस के साथ केरल में गठबंधन है जिसके कारण राहुल केरल से जीते थे और लगता है वो इस प्रकार की बयानबाज़ी करके अपना क़र्ज़ा उतार रहे हैं। यू.पी.ए. की सरकार के दौरान एक बिल लाने का प्रयास किया गया था जिसके अनुसार अगर दंगे होंगे तो हिंदू दोषी माना जाएगा और मुसलिम विक्टिम माना जाएगा। अगर यह बिल लागू हो जाता तो दंगे होने के कारण हिंदू को जेल जाना पड़ता। शुक्र है कि वो बिल नहीं आया। यही कांग्रेस की असली मानसिकता है।

सर्वाधिक लोगों को मालूम है कि इस माह भारत के प्रधान मंत्री स्टेट विज़िट पर यू.एस.ए. जा रहे हैं। वहाँ की सरकार आँखे बिछा कर प्रतीक्षा कर रही है जो राहुल गांधी पचा नहीं पा रहे हैं। इस बार तो पी.एम. संयुक्त हाउस को भी सम्बोधित करेंगे। एक देश का प्रधान मंत्री मोदी जी के पाँव छूता है, दूसरे देश का प्रधान मंत्री उन्हें बॉस कहकर पुकारता है और यू.एस. प्रेसिडेंट उनका ऑटोग्राफ़ माँगता है। इन हालात में राहुल गांधी मोदी जी के पहुँचने से पहले उनकी निंदा करना, सरकारी संस्थाओं के ख़िलाफ़ बोलना, ताकि पूरे विश्व पर उसका असर पड़े परंतु दुर्भाग्य है राहुल गांधी का कि पूरा विश्व नमन करता है हमारे मोदी जी को। राहुल गांधी ने यू.एस. में प्रत्यक्ष रूप में और लंदन में परोक्ष रूप में अपना नकारात्मक एजेंडा चलाया परंतु सफल नहीं हुए ना होंगे। विडम्बना इस बात की है कि उनके अपनी विचारधारा वाले श्रीमान पित्रोदा जी कहते हैं कि देश के पी.एम. हर जगह सम्मान के हक़दार हैं। यह दो बातें एक दूसरे के विपरीत नहीं है क्या? कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ।

विडम्बना इस बात की भी है कि राहुल गांधी ने 2004 से 2023 तक 19 साल में कोई ऐसा काम नहीं किया जिसको वो अपनी उपलब्धि मानकर विदेश में प्रचार कर सके। उनके पास नकारात्मकता के सिवा कुछ नहीं है व्यक्ति की दुकान में जो होता है वो व्यक्ति वही सामान बेचता है। राहुल के पास मोदी विरोधी, भाजपा विरोधी, आर.एस.एस. विरोधी, हिंदुत्व विरोधी विचार धारा के सिवा कुछ नहीं है। इसलिय उनकी इस प्रकार की प्रवृत्ति बन गई है। जनता को मंथन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ।

लेखक ने यह लेख विभाजन के दर्द से प्रेरित होकर निजी कपैसिटी में लिखा हैं क्योंकि हमारे बुज़ुर्गों ने विभाजन विभीषिका को सहा है। उन बुज़ुर्गों की आत्मा कभी भी अलगाववादियों की शक्तियों को माफ़ नहीं करेगी क्योंकि हमारे लिए राष्ट्र सर्वोपरि है।

www.gurgaontoday.in

गुड़गांव टुडे

सेक्युलर बनाम कम्यूनल की परिभाषा

कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ : बोधराज सीकरी

बोध राज सीकरी

राहुल गांधी का यह कहना कि इंडियन युनियन मुस्लिम लीग सेक्युलर है, एक हास्यास्पद बयान है क्योंकि अगर यह संस्था सेक्युलर है तो विश्व में कोई भी संस्था कम्यूनल नहीं है। जो संस्था जिन्ना की समर्थक है, जिस संस्था के कारण धर्म के आधार पर देश का विभाजन करवाया गया, जिस बटवारे के कारण हजारों बहनें विधवा हुई, हजारों बच्चे अनाथ हुए, हजारों महिलाओं की इज्जत लूटी गई, हजारों हमारे बुजुर्ग मारे गए, हजारों लोग बेघर हुए, अगर यह संस्था सेक्युलर है तो कम्यूनल कौन सी संस्था है।

हिंदुस्तान के टुकड़े होने का और पाकिस्तान का गठन होने का यदि कोई जिम्मेदार है तो यह संस्था ही है।

दो वर्ष पूर्व हमारे प्रधान मंत्री ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस आयोजन करने का फैसला लिया ताकि हमारे बुजुर्गों के जख्मों पर मरहम लग सके परंतु राहुल गांधी के इस गैर जिम्मेदाराना बयान ने हमारे जख्मों को फिर से हरा कर दिया है। अफसोस इस बात का है कि इस संस्था ने कांग्रेस के साथ गठजोड़ कर लाखों लोगों को दर-दर की ठोकरें खाने पर मजबूर किया। यह वो पार्टी है जो तीन तलाक के फैसले का पुरजोर विरोध करती है। फिर तो सिमी जैसी संस्था को भी राहुल गांधी को सेक्युलर घोषित करना चाहिए। यह लिखते हुए दर्द महसूस हो रहा है कि जिस पार्टी के जुलूस में पाकिस्तान के नारे लगाए जाते हैं, जिनके जुलूस में पाकिस्तान के झंडे को खुलेआम लहराया जाता है, ऐसी ऑर्गनाइजेशन को सेक्युलर ठहराया जा रहा है। यह अलगाववादियों का खेल नहीं तो क्या है।

अचम्भा इस बात का है कि जब भी राहुल विदेश जाते हैं तो अचानक देश की मर्यादा को भूल जाते हैं। यह एक विडंबना है।

सभी को मालूम ही होगा कि इस संस्था का कांग्रेस के साथ केरल में गठबंधन है जिसके कारण राहुल केरल से जीते थे और लगता है वो इस प्रकार की बयानबाजी करके अपना कर्जा उतार रहे हैं।

यू.पी.ए. की सरकार के दौरान एक बिल लाने का प्रयास किया गया था जिसके अनुसार अगर दंगे होंगे तो हिंदू दोषी माना जाएगा और मुस्लिम निर्दोष माना जाएगा। अगर यह बिल लागू हो जाता तो दंगे होने के कारण हिंदू को जेल जाना पड़ता। शुक्र है कि वो बिल नहीं आया। यही कांग्रेस की असली मानसिकता है।

सर्वाधिक लोगों को मालूम है कि इस माह भारत के प्रधान मंत्री स्टेट विजिट पर यू.एस.ए. जा रहे हैं। वहां की सरकार आंखें बिछा कर प्रतीक्षा कर रही है जो राहुल गांधी पचा नहीं पा रहे हैं। इस बार तो पी.एम. संयुक्त हाउस को भी सम्बोधित करेंगे। एक देश का प्रधान मंत्री मोदी जी के पांव छूता है, दूसरे देश का प्रधान मंत्री उन्हें बॉस कहकर पुकारता है और यू.एस. प्रेसिडेंट उनका ऑटोग्राफ मांगता है। इन हालात में राहुल गांधी मोदी जी के पहुंचने से पहले उनकी निंदा करना, सरकारी संस्थाओं के खिलाफ बोलना, ताकि पूरे विश्व पर उनका असर पड़े परंतु दुर्भाग्य है राहुल गांधी का कि पूरा विश्व नमन करता है हमारे मोदी जी को। राहुल गांधी ने यू.एस. में प्रत्यक्ष रूप में और लंदन में परोक्ष रूप में अपना नकारात्मक एजेंडा चलाया परंतु सफल नहीं हुए, ना होंगे। विडम्बना इस बात की है कि उनके अपनी विचारधारा वाले श्रीमान पित्रोदा जी कहते हैं कि देश के पी.एम. हर जगह सम्मान के हकदार हैं। यह दो बातें एक दूसरे के विपरीत नहीं हैं क्या?

कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ।

विडम्बना इस बात की भी है कि राहुल गांधी ने 2004 से 2023 तक 19 साल में कोई ऐसा काम नहीं किया जिसको वो अपनी उपलब्धि मानकर विदेश में प्रचार कर सकें। उनके पास नकारात्मकता के सिवा कुछ नहीं है। व्यक्ति की दुकान में जो होता है वो व्यक्ति वही सामान बेचता है। राहुल के पास मोदी विरोधी, भाजपा विरोधी, आर.एस.एस. विरोधी, हिंदुत्व विरोधी विचार धारा के सिवा कुछ नहीं है। इसलिये उनकी इस प्रकार की प्रवृत्ति बन गई है।

जनता को मंथन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ।

लेखक ने यह लेख विभाजन के दर्द से प्रेरित होकर निजी क्षमता में लिखा है क्योंकि हमारे बुजुर्गों ने विभाजन विभीषिका को सहा है। उन बुजुर्गों की आत्मा कभी भी अलगाववादियों की शक्तियों को माफ नहीं करेगी क्योंकि हमारे लिए राष्ट्र सर्वोपरि है।।

नये भारत का अखबार

गुड़गांव मेल

DAVP, Northern Rly., DIPR Haryana के विज्ञापनों के लिए अधिकृत हरियाणा के सभी जिलों, चण्डीगढ़ और दिल्ली में प्रसारित

सेक्युलर बनाम कम्यूनल की परिभाषा : बोध राज सीकरी

कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ

ब्यूरो/गुड़गांव मेल

गुड़गांव, 5 जून। राहुल गांधी का यह कहना कि इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग सेक्युलर है, एक हास्यास्पद बयान है क्योंकि अगर यह संस्था सेक्युलर है तो विश्व में कोई भी संस्था कम्यूनल नहीं है। जो संस्था जिन्ना की समर्थक है, जिस संस्था के कारण धर्म के आधार पर देश का विभाजन करवाया गया, जिस बँटवारे के कारण हजारों बहनें विधवा हुई, हजारों बच्चे अनाथ हुए, हजारों महिलाओं की इज्जत लूटी गई, हजारों हमारे बुजुर्ग मारे गए, हजारों लोग बेघर हुए, अगर वह संस्था सेक्युलर है तो कम्यूनल कौन सी संस्था है।

हिंदुस्तान के टुकड़े होने का और पाकिस्तान का गठन होने का यदि कोई उत्तरदायी है तो वह संस्था ही है।

दो वर्ष पूर्व हमारे प्रधान मंत्री ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस आयोजन करने का फैसला लिया ताकि हमारे बुजुर्गों के ज़ख्मों पर मरहम लग सके परंतु राहुल गांधी के इस गैर जिम्मेदाराना बयान ने हमारे ज़ख्मों को फिर से हरा कर दिया है। अफसोस इस बात का है कि इस संस्था ने कांग्रेस के साथ सौदेबाजी कर लाखों लोगों को दर-दर की ठोकरें खाने पर मजबूर किया। यह वो पार्टी है जो तीन तलाक के फैसले का पुरजोर विरोध करती है। फिर तो किसी ऐसी संस्था को भी राहुल गांधी को सेक्युलर घोषित करना चाहिए। यह लिखते हुए दर्द महसूस हो रहा है कि जिस पार्टी के जुलूस में पाकिस्तान के नारे लगाए जाते हैं, जिनके जुलूस में पाकिस्तान के झंडे को खुलेआम लहराया जाता है, ऐसी ऑर्गनाइजेशन को सेक्युलर ठहराया जा रहा है। यह अलगाववादियों का खेल नहीं तो क्या है।

अचम्भा इस बात का है कि जब भी राहुल विदेश जाते हैं तो अचानक देश की मर्यादा को भूल जाते हैं। यह एक विडंबना है।

सभी को मालूम ही होगा कि इस संस्था का कांग्रेस के साथ केरल में गठबंधन है जिसके कारण राहुल केरल से जीते थे और लगता है वो इस प्रकार की बयानबाज़ी करके अपना कर्ज़ा उतार रहे हैं।

यू.पी.ए. की सरकार के दौरान एक बिल लाने का प्रयास किया गया था जिसके अनुसार अगर दंगे होंगे तो हिंदू दोषी माना जाएगा और मुस्लिम विक्टिम माना जाएगा। अगर यह बिल लागू हो जाता तो दंगे होने के कारण हिंदू को जेल जाना पड़ता। शुक्र है कि वो बिल नहीं आया। यही कांग्रेस की असली मानसिकता है।

सर्वाधिक लोगों को मालूम है कि इस वक्त भारत के प्रधान मंत्री स्टेट विजिट पर यू.एस.ए. जा रहे हैं। वहाँ की सरकार आँखें बिछा कर प्रतीक्षा कर रही है जो राहुल गांधी पचा नहीं पा रहे हैं। इस बार तो पी.एम. संयुक्त हाउस को भी सम्बोधित करेंगे। एक देश का प्रधान मंत्री मोदी जी के पाँव छूता है, दूसरे देश का प्रधान मंत्री उन्हें बॉस कहकर पुकारता है और यू.एस. प्रेसिडेंट उनका ऑटोग्राफ माँगता है। इन हालात में राहुल गांधी मोदी जी के पहुँचने से पहले उनकी निंदा करना, सरकारी संस्थाओं के खिलाफ बोलना, ताकि पूरे विश्व पर उसका असर पड़े परंतु दुर्भाग्य है राहुल गांधी का कि पूरा विश्व मान करता है हमारे मोदी जी का। राहुल गांधी ने यू.एस. में प्रत्यक्ष रूप में और लंदन में परोक्ष रूप में अपना नकारात्मक एजेंडा चलाया परंतु सफल नहीं हुए, न होंगे। विडम्बना इस बात की है कि उनके अपनी विचारधारा वाले श्रीमान पित्रोदा जी कहते हैं कि देश के पी.एम. हर जगह सम्मान के हकदार हैं। यह दो बातें एक दूसरे के विपरीत नहीं हैं क्या?

कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ।

विडम्बना इस बात की भी है कि राहुल गांधी ने 2004 से 2023 तक 19 साल में कोई ऐसा काम नहीं किया जिसको वो अपनी उपलब्धि मानकर विदेश में प्रचार कर सके। उनके पास नकारात्मकता के सिवा कुछ नहीं है। व्यक्ति की दुकान में जो होता है वो व्यक्ति वही सामान बेचता है। राहुल के पास मोदी विरोधी, भाजपा विरोधी, आर.एस.एस. विरोधी, हिंदुत्व विरोधी विचार धारा के सिवा कुछ नहीं है। इसलिए उनकी इस प्रकार की प्रवृत्ति बन गई है।

जनता को मंथन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ।

लेखक ने यह लेख विभाजन के दर्द से प्रेरित होकर निजी कपैसिटी में लिखा है क्योंकि हमारे बुजुर्ग भी विभाजन विभीषिका को सहा है। उन बुजुर्गों की आत्मा कभी भी अलगाववादियों की शक्तियों को माफ नहीं करेगी क्योंकि हमारे लिए राष्ट्र सर्वोपरि है।

दैनिक

राष्ट्रीय हिंदी समाचार पत्र

उजाला आज तक

'कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ'

गुलशन भगत शर्मा उजाला आज तक
राहुल गांधी का यह कहना कि इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग सेक्युलर है, एक हास्यास्पद बयान है क्योंकि अगर यह संस्था सेक्युलर है तो विश्व में कोई भी संस्था कम्युनल नहीं है। जो संस्था जिन्ना की समर्थक है, जिस संस्था के कारण धर्म के आधार पर देश का विभाजन करवाया गया, जिस बँटवारे के कारण हमारी बहनें विधवा हुई, हमारे बच्चे अनाथ हुए, हजारों महिलाओं की इज्जत लूटी गई, हजारों हमारे बुजुर्ग मारे गए, हजारों लोग बेघर हुए, अगर वह संस्था सेक्युलर है तो कम्युनल कौन सी संस्था है।

हिंदुस्तान के टुकड़े होने का और पाकिस्तान का गठन होने का यदि कोई उत्तरदायी है तो यह संस्था ही है।

दो वर्ष पूर्व हमारे प्रधान मंत्री ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस आयोजन करने का फैसला लिया ताकि हमारे बुजुर्गों के जख्मों पर मरहम लग सके परंतु राहुल गांधी के इस गैर जिम्मेदाराना बयान ने हमारे जख्मों को फिर से हरा कर दिया है। अफसोस इस बात का है कि इस संस्था ने कांग्रेस के साथ सौदेबाजी कर लाखों लोगों को दर दर की ठोकरें खाने पर मजबूर किया। यह वो पार्टी है जो तीन तलाक के फैसले का पुरजोर विरोध करती है। फिर तो सिमी जैसी संस्था को भी राहुल गांधी को सेक्युलर घोषित करना चाहिए। यह लिखते हुए दर्द महसूस हो रहा है कि जिस पार्टी के जुलूस में पाकिस्तान के नारे लगाए जाते हैं, जिनके जुलूस में पाकिस्तान के झंडे को खुलेआम लहराया जाता है, ऐसी ऑर्गेनाइजेशन को सेक्युलर ठहराया जा रहा है। यह अलगाववादियों का खेल नहीं तो क्या है।

अचम्भा इस बात का है कि जब भी राहुल विदेश जाते है तो अचानक देश की मर्यादा को भूल जाते है। यह एक विडंबना है। सभी को मालूम ही होगा कि इस संस्था का कांग्रेस के साथ केरल में गठबंधन है जिसके कारण राहुल केरल से जीते थे और लगता है वो इस प्रकार की बयानबाजी करके अपना कर्जा उतार रहे है। यू.पी.ए. की सरकार के दौरान एक बिल लाने का प्रयास किया गया था जिसके अनुसार अगर दंगे होंगे तो हिंदू दोषी माना जाएगा और मुस्लिम विक्टिम माना जाएगा। अगर यह बिल लागू हो जाता तो दंगे होने के कारण हिंदू को जेल जाना पड़ता। शुक्र है कि वो बिल नहीं आया। यही कांग्रेस की असली मानसिकता है।

सार्वजनिक लोगों को मालूम है कि इस माह भारत के प्रधान मंत्री स्टेट विजिट पर यू.एस.ए. जा रहे हैं। वहीं की सरकार अच्छे विश्व का प्रतीक कर रही है जो राहुल गांधी पचा नहीं पा रहे हैं। इस बार तो पी.एम. संयुक्त हाउस को भी सम्बोधित करेंगे। एक देश का प्रधान मंत्री मोदी जी के पांव छूता है, दूसरे देश का प्रधान मंत्री उन्हें बॉस कहकर पुकारता है और यू.एस. प्रेसिडेंट उनका ऑटोग्राफ मांगता है। इन हालात में राहुल गांधी मोदी जी के पहुँचने से पहले उनको निंदा करना, सरकारी संस्थाओं के खिलाफ बोलना, ताकि पूरे विश्व पर उसका असर पड़े परंतु दुर्भाग्य है राहुल गांधी का कि पूरा विश्व नमन करता है हमारे मोदी जी को। राहुल गांधी ने यू.एस. में प्रत्यक्ष रूप में और लंदन में परोक्ष रूप में अपना नकारात्मक एजेंडा चलाना परंतु सफल नहीं हुए ना होंगे। विडम्बना इस बात की है कि उनके अपनी विचारधारा वाले श्रीमान पित्रोदा जी कहते हैं कि देश के पी.एम. का आदर सम्मान के हकदार हैं। यह दो बातें एक दूसरे के विपरीत नहीं है क्या?

कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ।

विडम्बना इस बात की भी है कि राहुल गांधी ने 2004 से 2023 तक 19 साल में कोई ऐसा काम नहीं किया जिसको वो अपनी उपलब्धि मानकर विदेश में प्रचार कर सकें। उनके पास नकारात्मकता के सिवा कुछ नहीं है क्योंकि की दुकान में जो होता है वो व्यक्ति वही सामान बेचता है। राहुल के पास मोदी विरोधी, भाजपा विरोधी, आर.एस.एस. विरोधी, हिंदुत्व विरोधी विचार धारा के सिवा कुछ नहीं है। इसलिए उनकी इस प्रकार की प्रवृत्ति बन गई है जनता को मंथन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ।

लेखक ने यह लेख विभाजन के दर्द से प्रेरित होकर निजी कैपेसिटी में लिखा है क्योंकि हमारे बुजुर्गों ने विभाजन विभीषिका को सहा है। उन बुजुर्गों की आत्मा कभी भी अलगाववादियों की शक्तियों को माफ नहीं करेंगी क्योंकि उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि है

उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला ने जताया शोक

पर्यावरण संरक्षण विभाग भाजपा ने हरियाणा

डीएम अरविन्द कुमार वर्मा द्वारा आज विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

R.N.I. No. 62787/2014

रण टाइम्स

सेक्युलर बनाम कम्यूनल की परिभाषा – बोध राज सीकरी

■ कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ: बोधराज सीकरी

राजू गुप्ता

गुरुग्राम, (रण टाइम्स)। राहुल गांधी का यह कहना कि इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग सेक्युलर है, एक हास्यास्पद बयान है क्योंकि अगर यह संस्था सेक्युलर है तो विश्व में कोई भी संस्था कम्यूनल नहीं है। जो संस्था जिन्ना की समर्थक है, जिस संस्था के कारण धर्म के आधार पर देश का विभाजन करवाया गया, जिस बँटवारे के कारण हज़ारों बहनें विधवा हुईं, हज़ारों बच्चे अनाथ हुए, हज़ारों महिलाओं की इज़्ज़त लूटी गई, हज़ारों हमारे बुज़ुर्ग मारे गए, हज़ारों लोग बेघर हुए, अगर वह संस्था सेक्युलर है तो कम्यूनल कौन सी संस्था है।

हिंदुस्तान के टुकड़े होने का और पाकिस्तान का गठन होने का यदि कोई उत्तरदायी है तो यह संस्था ही है।

दो वर्ष पूर्व हमारे प्रधान मंत्री ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस आयोजन करने का फ़ैसला लिया

ताकि हमारे बुज़ुर्गों के ज़ख्मों पर मरहम लग सके परंतु राहुल गांधी के इस ग़ैर ज़िम्मेदाराना बयान ने हमारे ज़ख्मों को फिर से हरा कर

दिया है। अफ़्सोस इस बात का है कि इस संस्था ने कांग्रेस के साथ सौदेबाज़ी कर लाखों लोगों को दर-दर की ठोकरें खाने पर मजबूर किया। यह वो पार्टी है जो तीन तलाक़ के फ़ैसले का पुरज़ोर विरोध करती है। फिर तो सिमी जैसी संस्था को भी राहुल गांधी को सेक्युलर घोषित करना चाहिए। यह लिखते हुए दर्द महसूस हो रहा है कि जिस पार्टी के जुलूस में पाकिस्तान के नारे लगाए जाते हैं, जिनके जुलूस में पाकिस्तान के झंडे को खुलेआम लहराया जाता है, ऐसी ऑर्गनाइज़ेशन को सेक्युलर ठहराया जा रहा है। यह अलगाववादियों का खेल नहीं तो क्या है।

अचम्भा इस बात का है कि जब भी राहुल विदेश जाते है तो अचानक देश की मर्यादा को भूल जाते है। यह एक विडंबना है।

सभी को मालूम ही होगा कि इस संस्था का कांग्रेस के साथ गठबंधन है जिसके कारण राहुल केरल से जीते थे और लगता है वो इस प्रकार की बयानबाज़ी करके अपना क़र्ज़ा उतार रहे हैं।

यू.पी.ए. की सरकार के दौरान एक बिल लाने का प्रयास किया गया था जिसके अनुसार अगर दंगे होंगे तो हिंदू दोषी माना जाएगा और मुस्लिम विक्टिम माना जाएगा। अगर यह बिल लागू हो जाता तो दंगे होने के कारण हिंदू को जेल जाना पड़ता। शुक्र है कि वो बिल नहीं आया। यही कांग्रेस की असली मानसिकता है।

सर्वाधिक लोगों को मालूम है कि इस माह भारत के प्रधान मंत्री स्टेट विज़िट पर यू.एस.ए. जा रहे हैं। वहाँ की सरकार आँखे बिछा कर प्रतीक्षा कर रही है जो राहुल गांधी पचा नहीं पा रहे हैं। इस बार तो पी.एम. संयुक्त हाउस को भी सम्बोधित करेंगे। एक देश का प्रधान मंत्री मोदी जी के पाँव छूता है, दूसरे देश का प्रधान मंत्री उन्हें बॉस कहकर पुकारता है और यू.एस. प्रेसिडेंट उनका ऑटोग्राफ़ माँगता है। इन हालात में राहुल गांधी मोदी जी के पहुँचने से पहले उनकी निंदा करना, सरकारी संस्थाओं के खिलाफ़ बोलना, ताकि पूरे विश्व पर उसका असर पड़े परंतु दुर्भाग्य है राहुल गांधी का कि पूरा विश्व नमन करता है हमारे मोदी जी को। राहुल गांधी ने यू.एस. में प्रत्यक्ष रूप में और लंदन में परोक्ष रूप में अपना नकारात्मक एजेंडा चलाया परंतु सफल नहीं हुए ना होंगे। विडम्बना इस बात की है कि उनके अपनी विचारधारा वाले श्रीमान पित्रोदा जी कहते हैं कि देश के पी.एम. हर जगह सम्मान के हक़दार हैं। यह दो बातें एक दूसरे के विपरीत नहीं है क्या?

कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ।

विडम्बना इस बात की भी है कि राहुल गांधी ने 2004 से 2023 तक 19 साल में कोई ऐसा काम नहीं किया जिसको वो अपनी उपलब्धि मानकर विदेश में प्रचार कर सके। उनके पास नकारात्मकता के सिवा कुछ नहीं है।

राष्ट्रीय दैनिक
जगत क्रान्ति

राहुल गांधी का बयान हास्यास्पद : बोधराज सीकरी

गुरुग्राम/अरोड़ा : इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग को राहुल गांधी द्वारा सेक्युलर बताना एक हास्यास्पद बयान है। क्योंकि इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग ने देश का धर्म के आधार पर विभाजन कराया था। विभाजन के कारण हजारों बहने विधवा हुई, हजारों बच्चे अनाथ हुए, हजारों महिलाओं की इज्जत लूटी गई, हजारों बुजुर्ग मारे गए, हजारों लोग बेघर हुए। उक्त बात पंजाबी बिरादरी महासंगठन के अध्यक्ष व सीएसआर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष बोधराज सीकरी ने कही। उन्होंने कहा कि यदि इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग सेक्युलर है तो फिर कम्युनल कौन सी संस्था है। देश के विभाजन और पाकिस्तान का गठन होने की जिम्मेदारी यही संस्था है। उन्होंने कहा कि करीब 2 वर्ष पूर्व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस आयोजन करने का निर्णय लिया ताकि विभाजन का दंश झेलने वालों के जख्मों पर मरहम लग सके। लेकिन राहुल गांधी ने ऐसा गैर जिम्मेदाराना बयान देकर उनके जख्मों को फिर से हरा कर दिया है।

कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ : बोधराज सीकरी

सेक्युलर बनाम कम्यूनल की परिभाषा - बोध राज सीकरी

गुरुग्राम (एनसीआर टाइम) राहुल गांधी का यह कहना कि इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग सेक्युलर है, एक हास्यास्पद बयान है क्योंकि अगर यह संस्था सेक्युलर है तो विश्व में कोई भी संस्था कम्यूनल नहीं है। जो संस्था जिन्ना की समर्थक है, जिस संस्था के कारण धर्म के आधार पर देश का विभाजन करवाया गया, जिस बँटवारे के कारण हजारों बहने विधवा हुई, हजारों बच्चे अनाथ हुए, हजारों महिलाओं की इज्जत लूटी गई, हजारों हमारे बुजुर्ग मारे गए, हजारों लोग बेघर हुए, अगर वह संस्था सेक्युलर है तो कम्यूनल कौन सी संस्था है। हिंदुस्तान के टुकड़े होने का और पाकिस्तान का गठन होने का यदि कोई उत्तरदायी है तो यह संस्था ही है। दो वर्ष पूर्व हमारे प्रधान मंत्री ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस आयोजन करने का फैसला लिया ताकि हमारे बुजुर्गों के जख्मों पर मरहम लग सके परंतु राहुल गांधी के इस गैर जिम्मेदाराना बयान ने हमारे जख्मों को फिर से हरा कर दिया है। अफसोस इस बात का है कि इस संस्था ने कांग्रेस के साथ सौदेबाजी कर लाखों लोगों को दर–दर की ठोकरें खाने पर मजबूर किया। यह वो पार्टी है जो तीन तलाक के फैसले का पुरजोर विरोध करती है। फिर तो सिमी जैसी संस्था को भी राहुल गांधी को सेक्युलर घोषित करना चाहिए। यह लिखते हुए दर्द महसूस हो रहा है कि जिस पार्टी के जुलूस में पाकिस्तान के नारे लगाए जाते हैं, जिनके जुलूस में पाकिस्तान के झंडे को खुलेआम लहराया जाता है, ऐसी ऑर्गनाइजेशन को सेक्युलर ठहराया जा रहा है। यह अलगाववादियों का खेल नहीं तो क्या है।

अचम्भा इस बात का है कि जब भी राहुल विदेश जाते है तो अचानक देश की मर्यादा को भूल जाते है। यह एक विडंबना है। सभी को मालूम ही होगा कि इस संस्था का कांग्रेस के साथ केरल में गठबंधन है जिसके कारण राहुल केरल से जीते थे और लगता है वो इस प्रकार की बयानबाजी करके अपना क़र्जा उतार रहे हैं। यू.पी.ए. की सरकार के दौरान एक बिल लाने का प्रयास किया गया था जिसके अनुसार अगर दंगे होंगे तो हिंदू दोषी माना जाएगा और मुस्लिम विक्टिम माना जाएगा। अगर यह बिल लागू हो जाता तो दंगे होने के कारण हिंदू को जेल जाना पड़ता। शुक्र है कि वो बिल नहीं आया। यही कांग्रेस की असली मानसिकता है। सर्वाधिक लोगों को मालूम है कि इस माह भारत के प्रधान मंत्री स्टेट विजिट पर यू.एस.ए. जा रहे हैं। वहाँ की सरकार आँखे बिछा कर प्रतीक्षा कर रही है जो राहुल गांधी पचा नहीं पा रहे हैं। इस बार तो पी. एम. संयुक्त हाउस को भी सम्बोधित करेंगे। एक देश का प्रधान मंत्री मोदी जी के पाँव छूता है, दूसरे देश का प्रधान मंत्री उन्हें बॉस कहकर पुकारता है और यू.एस. प्रेसिडेंट उनका ऑटोग्राफ माँगता है।

इन हालात में राहुल गांधी मोदी जी के पहुँचने से पहले उनकी निंदा करना, सरकारी संस्थाओं के ख़लिाफ बोलना, ताकि पूरे विश्व पर उसका असर पड़े परंतु दुर्भाग्य है राहुल गांधी का कि पूरा विश्व नमन करता है हमारे मोदी जी को। राहुल गांधी ने यू.एस. में प्रत्यक्ष रूप में और लंदन में परोक्ष रूप में अपना नकारात्मक एजेंडा चलाया परंतु सफल नहीं हुए ना होंगे। विडम्बना इस बात की है कि उनके अपनी विचारधारा वाले श्रीमान पित्रोदा जी कहते हैं कि देश के पी.एम. हर जगह सम्मान के हक़दार हैं। यह दो बातें एक दूसरे के विपरीत नहीं है क्या? कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ।

विडम्बना इस बात की भी है कि राहुल गांधी ने 2004 से 2023 तक 19 साल में कोई ऐसा काम नहीं किया जिसको वो अपनी उपलब्धि मानकर विदेश में प्रचार कर सके। उनके पास नकारात्मकता के सिवा कुछ नहीं है।व्यक्ति की दुकान में जो होता है वो व्यक्ति वही सामान बेचता है। राहुल के पास मोदी विरोधी, भाजपा विरोधी, आर.एस.एस. विरोधी, हिंदुत्व विरोधी विचार धारा के सिवा कुछ नहीं है। इसलिय उनकी इस प्रकार की प्रवृत्ति बन गई है। जनता को मंथन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ। लेखक ने यह लेख विभाजन के दर्द से प्रेरित होकर निजी कपैसिटी में लिखा है क्योंकि हमारे बुजुर्गों ने विभाजन विभीषिका को सहा है। उन बुजुर्गों की आत्मा कभी भी अलगाववादियों की शक्तियों को माफ नहीं करेगी क्योकि हमारे लिए राष्ट्र सर्वोपरि है ।।

नई दिल्ली, लखनऊ, रायपुर और फरीदाबाद से प्रकाशित
पायनियर

कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए : बोधराज सीकरी

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

हरियाणा सीएसआर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष एवं पंजाबी बिरादरी महासंगठन के प्रधान बोधराज सीकरी ने राहुल गांधी के उस कथन को हास्यास्पद बताया है, जिसमें उन्होंने कहा है कि इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग सेक्युलर है। बोधराज सीकरी ने उनके कथन की निंदा करते हुए कहा कि जो संस्था जिन्ना की समर्थक है, जिस संस्था के कारण धर्म के आधार पर देश का विभाजन करवाया गया। जिस बंटवारे के कारण हजारों बहनें विधवा हुई, हजारों बच्चे अनाथ हुए, हजारों महिलाओं की इज्जत लूटी गई। बुजुर्ग मारे गए। लोग बेघर हुए।

अगर वह संस्था सेक्युलर है तो कम्यूनल कौन सी संस्था है। उन्होंने कहा कि हिंदुस्तान के टुकड़े होने का और पाकिस्तान का गठन होने का यदि कोई उत्तरदायी है तो यह संस्था ही है। सीकरी ने कहा कि दो वर्ष पूर्व हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस आयोजन करने का निर्णय लिया, ताकि हमारे बुजुर्गों के जख्मों पर मरहम लग सके। राहुल गांधी के

बोधराज सीकरी।

इस गैर जिम्मेदाराना बयान से हमारे जख्मों को फिर से हरा कर दिया है। अफसोस इस बात का है कि इस संस्था ने कांग्रेस के साथ सौदेबाजी कर लाखों लोगों को दर-दर की ठोकरें खाने पर मजबूर किया। यह वो पार्टी है जो तीन तलाक के फैसले का पुरजोर विरोध करती है। फिर तो सिमी जैसी संस्था को भी राहुल गांधी को सेक्युलर घोषित करना चाहिए। बोधराज सीकरी ने कहा कि यूपीए की सरकार के दौरान एक बिल लाने का प्रयास किया गया था, जिसके अनुसार अगर दंगे होंगे तो हिंदू दोषी माना जाएगा और मुस्लिम विक्टिम माना जाएगा। अगर यह बिल लागू हो जाता तो दंगे होने के कारण हिंदू को जेल जाना पड़ता। शुक्र है कि वो बिल नहीं आया। यही कांग्रेस की असली मानसिकता है।

Bharat Sarathi
A Complete News Website

कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ : बोधराज सीकरी

गुरुग्राम, 05 जून। राहुल गांधी का यह कहना कि इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग सेक्युलर है, एक हास्यास्पद बयान है क्योंकि अगर यह संस्था सेक्युलर है तो विश्व में कोई भी संस्था कम्यूनल नहीं है। जो संस्था जिन्ना की समर्थक है, जिस संस्था के कारण धर्म के आधार पर देश का विभाजन करवाया गया, जिस बँटवारे के कारण हज़ारों बहने विधवा हुई, हज़ारों बच्चे अनाथ हुए, हज़ारों महिलाओं की इज़्ज़त लूटी गई, हज़ारों हमारे बुजुर्ग मारे गए, हज़ारों लोग बेघर हुए, अगर वह संस्था सेक्युलर है तो कम्यूनल कौन सी संस्था है।

हिंदुस्तान के टुकड़े होने का और पाकिस्तान का गठन होने का यदि कोई उत्तरदायी है तो यह संस्था ही है।

दो वर्ष पूर्व हमारे प्रधान मंत्री ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस आयोजन करने का फ़ैसला लिया ताकि हमारे बुजुर्गों के ज़ख्मों पर मरहम लग सके परंतु राहुल गांधी के इस ग़ैर ज़िम्मेदाराना बयान ने हमारे ज़ख्मों को फिर से हरा कर दिया है। अफ़सोस इस बात का है कि इस संस्था ने कांग्रेस के साथ सौदेबाज़ी कर लाखों लोगों को दर-दर की ठोकरें खाने पर मजबूर किया। यह वो पार्टी है जो तीन तलाक़ के फ़ैसले का पुरज़ोर विरोध करती है। फिर तो सिमी जैसी संस्था को भी राहुल गांधी को सेक्युलर घोषित करना चाहिए। यह लिखते हुए दर्द महसूस हो रहा है कि जिस पार्टी के जुलूस में पाकिस्तान के नारे लगाए जाते हैं, जिनके जुलूस में पाकिस्तान के झंडे को खुलेआम लहराया जाता है, ऐसी ऑर्गनाइज़ेशन को सेक्युलर ठहराया जा रहा है। यह अलगाववादियों का खेल नहीं तो क्या है।

अचम्भा इस बात का है कि जब भी राहुल विदेश जाते है तो अचानक देश की मर्यादा को भूल जाते है। यह एक विडंबना है।

सभी को मालूम ही होगा कि इस संस्था का कांग्रेस के साथ केरल में गठबंधन है जिसके कारण राहुल केरल से जीते थे और लगता है वो इस प्रकार की बयानबाज़ी करके अपना क़र्ज़ा उतार रहे हैं।

POLITICS

Bodhraj Sikri – कांग्रेस को मंथन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष

VIRAL SACH June 5, 2023 No Comments 1 4 minute read

Viral Sach : Bodhraj Sikri – राहुल गांधी का यह कहना कि इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग सेक्युलर है। एक हास्यास्पद बयान है क्योंकि अगर यह संस्था सेक्युलर है तो विश्व में कोई भी संस्था कम्यूनल नहीं है।

जो संस्था जिन्ना की समर्थक है, जिस संस्था के कारण धर्म के आधार पर देश का विभाजन करवाया गया, जिस बँटवारे के कारण हज़ारों बहने विधवा हुई, हज़ारों बच्चे अनाथ हुए, हज़ारों महिलाओं की इज़्ज़त लूटी गई, हज़ारों हमारे बुज़ुर्ग मारे गए, हज़ारों लोग बेघर हुए, अगर वह संस्था सेक्युलर है तो कम्यूनल कौन सी संस्था है।

हिंदुस्तान के टुकड़े होने का और पाकिस्तान का गठन होने का यदि कोई उत्तरदायी है तो यह संस्था ही है। दो वर्ष पूर्व हमारे प्रधान मंत्री ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस आयोजन करने का फ़ैसला लिया ताकि हमारे बुज़ुर्गों के ज़ख्मों पर मरहम लग सके।

परंतु राहुल गांधी के इस ग़ैर ज़िम्मेदाराना बयान ने हमारे ज़ख्मों को फिर से हरा कर दिया है। अफ़सोस इस बात का है कि इस संस्था ने कांग्रेस के साथ सौदेबाज़ी कर लाखों लोगों को दर-दर की ठोकरें खाने पर मजबूर किया।

यह वो पार्टी है जो तीन तलाक़ के फ़ैसले का पुरज़ोर विरोध करती है। फिर तो सिमी जैसी संस्था को भी राहुल गांधी को सेक्युलर घोषित करना चाहिए। यह लिखते हुए दर्द महसूस हो रहा है कि जिस पार्टी के जुलूस में पाकिस्तान के नारे लगाए जाते हैं, जिनके जुलूस में पाकिस्तान के झंडे को खुलेआम लहराया जाता है, ऐसी ऑर्गनाइज़ेशन को सेक्युलर ठहराया जा रहा है। यह अलगाववादियों का खेल नहीं तो क्या है।

एक देश का प्रधान मंत्री मोदी जी के पाँव छूता है, दूसरे देश का प्रधान मंत्री उन्हें बॉस कहकर पुकारता है और यू.एस. प्रेसिडेंट उनका ऑटोग्राफ़ माँगता है। इन हालात में राहुल गांधी मोदी जी के पहुँचने से पहले उनकी निंदा करना, सरकारी संस्थाओं के ख़िलाफ़ बोलना, ताकि पूरे विश्व पर उसका असर पड़े परंतु दुर्भाग्य है राहुल गांधी का कि पूरा विश्व नमन करता है हमारे मोदी जी को।

राहुल गांधी ने यू.एस. में प्रत्यक्ष रूप में और लंदन में परोक्ष रूप में अपना नकारात्मक एजेंडा चलाया परंतु सफल नहीं हुए ना होंगे। विडम्बना इस बात की है कि उनके अपनी विचारधारा वाले श्रीमान पित्रोदा जी कहते हैं कि देश के पी.एम. हर जगह सम्मान के हक़दार हैं। यह दो बातें एक दूसरे के विपरीत नहीं है क्या?

कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ।

विडम्बना इस बात की भी है कि राहुल गांधी ने 2004 से 2023 तक 19 साल में कोई ऐसा काम नहीं किया जिसको वो अपनी उपलब्धि मानकर विदेश में प्रचार कर सके। उनके पास नकारात्मकता के सिवा कुछ नहीं है। व्यक्ति की दुकान में जो होता है वो व्यक्ति वही सामान बेचता है।

राहुल के पास मोदी विरोधी, भाजपा विरोधी, आर.एस.एस. विरोधी, हिंदुत्व विरोधी विचार धारा के सिवा कुछ नहीं है। इसलिए उनकी इस प्रकार की प्रवृत्ति बन गई है।

जनता को मंथन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ।